मृतक कहां हैं?

लूका 16:19-31

''मृतक कहां हैं?'' यह ऐसा प्रश्न है, जो बहुत से लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। हम बहुत कुछ जानना चाहते हैं कि मरने के तुरन्त बाद हम कहां जाएंगे, हमारे विदा हो गए मित्र होश में हैं या नहीं या हमारे प्रिय इस बात को जानते भी हैं या नहीं कि हम उनके जाने से उदास हैं,[1] और भी ऐसे कई प्रश्न हैं, जिन में से कुछ प्रश्नों का उत्तर हम नहीं दे सकते। परमेश्वर की यही इच्छा रही है कि अगले जीवन से सम्बन्धित कुछ बातें वह अपने पास रख छोड़े।

मैं मानता हूं कि मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में हमारा ज्ञान सीमित करने में परमेश्वर का अनुग्रहकारी उद्देश्य है। क्या यह विश्वास करना बेचैन करने वाला नहीं होगा कि संसार से विदा हो चुके हमारे प्रियजन हमारे निकट, हमारी बातें सुनते और देखते हैं कि हम क्या कर रहे हैं? मुझे गलत न समझें: मैं यह नहीं कह रहा कि ऐसा ही है। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूं कि यदि ऐसा *होता* तो, यह जानकर कि कोई हमें देख रहा है, हम में से कइयों को बेचैन कर देता।

मूलत:, प्रभु चाहता है कि हम एक समय में एक ही संसार में रहें। यदि वह हमें अगले जीवन की बातों पर निर्भर होने की अनुमति दे देता तो इस जीवन में व्यावहारिक दृष्टि से हम अयोग्य हो सकते थे। क्योंकि पिता की इच्छा है कि आने वाले संसार की कुछ बातें हमें न बताए (देखें व्यवस्थाविवरण 29:29), हमें संतुष्ट होकर यह कहना चाहिए, ''तेरी इच्छा पूरी हो'' (देखें मत्ती 26:42)।

परन्तु हमें वह जानने का अधिकार है, जो इस विषय पर परमेश्वर ने प्रकट *कर दिया है*। ''मृतक कहां हैं?'' प्रश्न का उत्तर बाइबल में से ढूंढ़ने के लिए हम यीशु द्वारा बताई गई एक कहानी का अध्ययन करेंगे:

> एक धनवान मनुष्य था, जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूमधाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का[2] एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकार कर कहा, हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर

> मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु अब्राहम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड्ढा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें वे न जा सकें और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा तो हे पिता मैं तुझ से विनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उनके साम्हने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। अब्राहम ने उससे कहा, उनके पास तो मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। उस ने कहा; नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। उसने उससे कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौ भी उस की नहीं मानेंगे (लूका 16:19-31)।

इन पदों से कई सबक मिल सकते हैं,[3] परन्तु इस पाठ में हम केवल एक ही प्रश्न पर विचार करेंगे कि इन आयतों में मृतकों की स्थिति के बारे में क्या बताया गया?

''परन्तु'' कोई विरोध कर सकता है, ''आप इन आयतों से कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं, क्योंकि यह तो एक *दृष्टांत* है और मृत्यु के बाद जीवन की वास्तविक तस्वीर नहीं है।'' यदि यह एक दृष्टांत है तो यह दृष्टांतों की सामान्य श्रेणी में नहीं आता।[4] उदाहरण के लिए यीशु ने कहानी के लिए एक पात्र का नाम ''लाज़र'' बताया। जहां तक मुझे मालूम है, ऐसा उसने किसी अन्य दृष्टांत में नहीं किया। इसके अलावा दृष्टांत का मूल विचार कोई आत्मिक सबक देने के लिए सभी परिचित बातों का इस्तेमाल करना होता है। मुझे नहीं लगता कि सुनने वाला मृतकों की स्थिति से इतनी अच्छी तरह वाकिफ़ था। उपलब्ध तथ्यों से यह सुझाव मिलना था कि यह कोई दृष्टांत नहीं, बल्कि अपना संदेश समझाने के लिए यीशु द्वारा वास्तविक जीवन की कहानी बताई गई है।[5]

दूसरी ओर, यदि हम यह मान लें कि यह एक दृष्टांत ही था? जहां तक इसकी सच्चाइयों की बात है तो उससे इसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ''दृष्टांत'' का अर्थ ''परी कथा'' नहीं है। दृष्टांत जीवन की वास्तविक स्थिति बताकर उसकी आत्मिक प्रासंगिकता बनाना है।[6] मैं नहीं मानता कि लूका 16:19-31 एक दृष्टांत है, बल्कि यदि हो भी, तो भी यह देह रहित आत्माओं का वास्तविक विवरण है।

इसलिए मैं मानता हूं कि हम धनी आदमी और लाज़र की कहानी का इस्तेमाल ''मृतक कहां हैं?'' प्रश्न के लिए परमेश्वर का उत्तर देने में कर सकते हैं।[7] इन आयतों की समीक्षा करते हुए हम कई निष्कर्षों पर पहुंचेंगे।

मृतक कहीं न कहीं हैं-और होश में हैं

''मृतक कहां हैं?'' प्रश्न का उत्तर देते हुए कुछ लोग जवाब देंगे कि वे ''कहीं नहीं'' हैं।[8] इन लोगों का मानना है कि इस जीवन के बाद कोई जीवन नहीं है। वे यह विश्वास करते

हैं कि जीवन एकमार्गी सड़क है, जिसका अन्त मृत्यु है। परन्तु लूका 16 से यदि कोई शिक्षा मिलती है तो वह यह है कि मनुष्य मरने के बाद भी जीवित रहता है।

दूसरे लोग, जो इस जीवन के बाद भी जीवन होने को मानते हैं, सिखाते हैं कि मरने पर लोगों का अस्तित्व खत्म हो जाता है (केवल परमेश्वर के स्मरण में ही ''अस्तित्व'' है) और एक दिन ''जी उठना'' (वास्तव में, नई सृष्टि) होगा जब धर्मी लोग सदा के लिए जीवित रहेंगे और दुष्टों का नाश किया जाएगा। धनी आदमी और लाज़र मरने के बाद खत्म नहीं हुए थे। दोनों जीवित थे और होश में थे।

ऊपर वर्णित दो शिक्षाएं देने वालों के साथ मेरी चर्चाओं में, कई बार ''मृत्यु'' शब्द पर खेल खेला जाता है। वे कहते हैं, ''यदि मृत्यु के बाद आत्मा जीवित रहती है, तो कोई मृत्यु नहीं है।'' मैं उन से ''मृत्यु'' का अर्थ बताने के लिए कहता हूं। उनके मन में ''मृत्यु'' का अर्थ ''अन्त'' होना है, परन्तु यह अर्थ नीचे दिए गए वचनों से मेल नहीं खाता:

- *रोमियों 7:9.* पौलुस ने कहा, ''मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परन्तु अब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।'' क्या पौलुस का अस्तित्व खत्म हो गया था?
- *कुलुस्सियों 3:3.* पौलुस ने यह भी लिखा, ''क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।'' क्या उसके पाठकों का अस्तित्व नहीं था?
- *1 तीमुथियुस 5:6.* उसने यह भी कहा कि ''जो भोग विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है।'' ऐसी स्त्री खत्म तो नहीं हुई है।

''मत्यु'' शब्द का मूल अर्थ ''जुदाई''[9] अर्थात एक स्थिति का अन्त है और इसका अर्थ खत्म होना नहीं है।

साधारणतया यह विचार रखने वाले लोग प्राण या आत्मा कहे जाने वाले मनुष्य के अनश्वर भाग के अस्तित्व का इनकार करते हैं। उनका कहना है, ''प्राण तो हमारे भीतर के शारीरिक जीवन को कहा गया है।'' वे ज़ोर देते हैं कि ''आत्मा हम में से हर किसी को दिए गए परमेश्वर के श्वास से बढ़कर कुछ नहीं है।'' ''प्राण'' (*psuche*) के लिए यूनानी शब्द का अर्थ श्वास, भावनाओं का स्थान या जीवित प्राण भी हो सकता है; पर इसका अर्थ ''वह सत्व'' भी हो सकता है, ''जो देह से अलग है और मृत्यु में विलीन नहीं होता।''[10] इसी प्रकार ''आत्मा'' (*pneuma*) के लिए यूनानी शब्द का अर्थ वायु, श्वास या वह महत्वपूर्ण सिद्धांत हो सकता है, जिसके द्वारा देह चलती है, पर ''आत्मा, ... केवल सत्व, सब या कम से कम सब तत्व से अलग है, जिसमें जानने, इच्छा रखने, निर्णय लेने और कार्य करने की सामर्थ है; ... एक मानवीय प्राण, जिसने देह को त्याग दिया है।''[11]

बहुत सी आयतों से संकेत मिलता है कि मनुष्य दोहरा प्राणी है और यह कि देह के अस्तित्व के समाप्त होने के बाद, प्राण या आत्मा जीवित रहती है। कुछ विशेष पद ये हैं:

तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसने उसे दिया, लौट जाएगी (सभोपदेशक 12:7)।

[मसीह] ने [पश्चात्तापी डाकू] से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा (लूका 23:43)।

और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए (लूका 23:46)।

और वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर (प्रेरितों 7:59)।

इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौ भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन-प्रतिदिन नया होता जाता है। ...

क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। ... सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। ... इसलिए हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं (2 कुरिन्थियों 4:16-5:8)।

हमें आत्माएं कहां से मिलती हैं? बाइबल परमेश्वर को ''आत्माओं का पिता'' कहती है (इब्रानियों 12:9)। जकर्याह भविष्यवक्ता ने कहा था कि प्रभु ''मनुष्य की आत्मा का रखने वाला है'' (जकर्याह 12:1)।

''मृतक कहां हैं?'' प्रश्न का उत्तर पहले हम यह देते हैं कि ''वे कहीं न कहीं हैं, और होश में हैं।'' परन्तु वचन से इससे भी अधिक जाना जा सकता है।

मृतक को इस पृथ्वी पर नये शरीरों में पुनर्जन्म नहीं मिलता

पुनर्जन्म की शिक्षा में यह विश्वास किया जाता है कि मरे हुए लोगों की आत्माएं नये रूपों या शरीरों में पृथ्वी पर आती रहती हैं। हिन्दू धर्म तथा कई पूर्वीय धर्मों की यह मूल शिक्षा है। जिन देशों में यह शिक्षा प्रचलित है, उन में गायों, बन्दरों और सांपों को पवित्र माना जाता है। उनका विश्वास है कि ये जानवर उन लोगों के पूर्वजों की आत्माएं हो सकते हैं। पुनर्जन्म की इससे अलग विचारधारा कुछ यहूदियों में पाई जाती थी (देखें मत्ती 16:13, 14) और समय-समय पर पश्चिमी जगत में भी यह विचार नये सिरे से लोगों की दिलचस्पी का कारण बनता रहता है।

परन्तु लूका 16 में धनी आदमी और लाज़र किसी नये रूप या नई देह में पृथ्वी पर नहीं लौटे। वे अभी भी वहीं थे और वचन इस बात पर ज़ोर देता है कि उनकी स्थिति को बदला

नहीं जा सकता था। आयत 26 कहती है, ''इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड्ढा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहे वह न जा सकें; और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके।'' वास्तव में, अब्राहम के कहने का अर्थ यह था कि किसी भी रूप में कोई भी वापस नहीं लौट सकता था।

पुनर्जन्म की कहानियों के बारे में मीडिया की बातों से मैं अधिक रोमांचित नहीं होता। इसका एक कारण यह है कि जीवन के लिए मेरे पास बाइबल एक मापदण्ड है। नये विचार दिलचस्प हो सकते हैं, पर उनको मैं इस कसौटी से परखता हूं: यह वचन की शिक्षाओं से कैसे मेल खाता है ? सीधी सी सच्चाई यह है कि पुनर्जन्म की शिक्षा बाइबल में नहीं दी गई है। बाइबल के कुछ मूल सिद्धांतों पर ध्यान दें:

- *सभोपदेशक 3:2.* ''घात करने का समय [एक वचन] है।''
- *इब्रानियों 9:27.* ''... मनुष्यों के लिए *एक बार*'' मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है''-किसी और देह में नहीं।
- *सभोपदेशक 12:7.* तब ''आत्मा *परमेश्वर* के पास'' किसी और शरीर में नहीं ''जिसने उसे दिया, लौट जाएगी।''
- *2 कुरिन्थियों 5:10.* ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उस ने देह [एकवचन] के द्वारा किए हों, पाए।''

बाइबल पुनर्जन्म की शिक्षा *नहीं* देती। इसलिए इस शिक्षा को मानना विश्वास से नहीं हो सकता (देखें रोमियों 10:17)। लूका 16 यह स्पष्ट कर देता है कि यह शिक्षा गलत है।

मृतक सीधे अपने अंतिम प्रतिफल के लिए नहीं गए हैं

कुछ लोगों की सोच है कि मृत्यु के समय, लोग सीधे स्वर्ग या नरक में जाते हैं। धनी व्यक्ति और लाज़र उन अन्तिम अवस्थाओं में नहीं पहुंचे थे (जैसा कि बाद में हम अपने अध्ययन में देखेंगे)।[12]

यदि लोग मृत्यु के समय सीधे अपना अन्तिम प्रतिफल पाने के लिए चले जाते हैं, तो यह अन्त के दिन पर बाइबल की शिक्षा को बहुत हद तक नकार देगा। बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि एक दिन सब लोगों का, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, न्याय होगा (मत्ती 25:31, 32; यूहन्ना 16:8; प्रेरितों 17:31; इब्रानियों 6:2; 9:27; देखें प्रेरितों 24:25)। इस न्याय में प्रभु के लौटने से पहले मर जाने वाले लोग भी होंगे (देखें मत्ती 12:41, 42)। पतरस ने लिखा है कि ''प्रभु ... अधर्मियों [अधर्मी मृतकों की बात] को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है'' (2 पतरस 2:9)। न्याय पर बाइबल की सामान्य शिक्षा यह थी कि यह प्रभु के लौटने पर होगा, जब जीवित और मृत दोनों तरह के लोगों को प्रभु के सामने खड़ा किया जाएगा। ऐसा लगता नहीं है कि मृत्यु के समय लोगों को स्वर्ग

या नरक में डाल दिया जाए और न्याय के दिन उन्हें वहां से बाहर लाया जाए, जहां से उन्हें फिर वहां रख दिया जाए, जहां वे थे।[13]

यह सच है कि दोनों आयतों से लगता है कि इनमें यह संकेत है कि धर्मी लोग अपना प्रतिफल पाने के लिए तुरन्त चले जाते हैं: पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को बताया कि उसे ''देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम'' लगता है (2 कुरिन्थियों 5:8)। दोबारा, इस प्रेरित ने फिलिप्पियों को लिखा कि ''जी तो चाहता है कि कूच कर मसीह के पास जा रहूं'' (फिलिप्पियों 1:23)। परन्तु मैं सुझाव दूंगा कि इन दोनों आयतों का उद्देश्य मृतकों की अन्तिम अवस्था के बारे में सिखाना नहीं, बल्कि यह ज़ोर देना है कि मृत्यु तैयार लोगों के लिए एक विजय है। इस बात का तो महत्व है कि यहां से गए धर्मी लोग ''मसीह के साथ'' उसके प्रेम में घिरे रहेंगे, परन्तु इस बात का कोई अर्थ नहीं है कि वे सीधे स्वर्ग में जाएंगे।[14]

मैं और सुझाव दूंगा कि जब पौलुस मरा, तो वह ''प्रभु के साथ'' होने के लिए *गया* परन्तु यह कि उसे स्वर्ग में उसका मुकुट अभी नहीं मिला है। यीशु ने बताया था कि दूसरों से प्रेम जताने वाले लोगों को (लूका 14:12, 13) पुनरुत्थान के समय ''प्रतिफल मिलेगा'' (लूका 14:14), न कि मृत्यु के समय। अधिकतर विद्वानों का मत है कि यीशु ने यह कहते हुए कि ''मैं ... फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो'' (यूहन्ना 14:3) अपने द्वितीय आगमन की बात की। पौलुस के धर्म के मुकुट के सम्बन्ध में उसने लिखा कि ''प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं'' (2 तीमुथियुस 4:8)। ''उस दिन'' वाक्यांश पर ध्यान दें और इस बात पर कि पौलुस ने संकेत दिया कि मसीह के आने को प्रिय जानने वाले सभी लोगों को वही मुकुट एक ही ''दिन'' दिया जाएगा। संदर्भ में कहें तो यह एक दिन न्याय वाला दिन ही है।

यहां तक मैंने लूका 16 की कहानी को नकारात्मक ढंग से ही लिया है। हमने कई विचारों को नकारा है कि मृतक कहीं नहीं हैं, कि वे पृथ्वी पर किसी दूसरे की देह में हैं, या और वे स्वर्ग या नरक में पहुंच गए हैं। प्रश्न फिर भी बना रहता है कि ''तो फिर, मृतक कहां, *हैं*?'' आइए अब लूका 16 की सकारात्मक समीक्षा करते हैं।

मृतक न्याय की प्रतीक्षा करते हुए, मध्य-अवस्था में हैं

वर्षों से, सुसमाचार के प्रचारक लूका 16 में वर्णित अधोलोक के संसार को दर्शाने के लिए रेखाचित्रों का इस्तेमाल करते रहे हैं। ऐसे रेखाचित्रों की अपनी कमज़ोरी होती है, क्योंकि उनसे यह प्रभाव जा सकता है कि अधोलोक एक भौगोलिक स्थिति है, जो कि गलत है। अधोलोक अस्तित्व का स्थान नहीं, बल्कि एक अवस्था है। तौ भी कहानी में दिखाई गई अलग-अलग स्थितियों पर ध्यान लगाने का और प्रभावकारी ढंग मुझे मालूम नहीं। इसलिए मैं रेखाचित्र बनाता हूं, जिसका इस्तेमाल लूका 16 में मिलने वाले पदनामों के लिए किया गया है (देखें ''अधोलोक [अदृश्य संसार]'' का रेखाचित्र।)

रेखाचित्र के विभिन्न तत्वों को देखिए। पहले ऊपर शीर्षक पर ध्यान दें: ''**अधोलोक** (अदृश्य संसार)।'' धनी व्यक्ति ने ''अधोलोक में'' ''अपनी आंखें उठाईं'' (लूका 16:23)। बाइबल में मृतकों की अवस्था को ''हेडिस'' कहा गया है। *हेडिस* एक यूनानी शब्द है, जो पुराने नियम के इब्रानी शब्द *शियोल* से मिलता-जुलता है।[15] *हेडिस* शब्द का मूल अर्थ ''अदृश्य''[16] है और इसका इस्तेमाल मृतकों के ''अदृश्य [संसार]'' के लिए किया जाता है। थेयर ने लूका 16 में इस्तेमाल किए गए शब्द की परिभाषा ''देह रहित आत्माओं का सामान्य स्थान''[17] आज ''अधोलोक'' शब्द का इस्तेमाल ''नरक'' कोमल पद के रूप में किया है,[18] परन्तु नरक (*gehenna*) दुष्ट मृतकों की अंतिम अवस्था है, जबकि (जैसा कि हम देखेंगे) हेडिस या अधोलोक सभी मृतकों की, चाहे वे बुरे हों या अच्छे बीच की अवस्था है।

अधोलोक

(अदृश्य संसार)

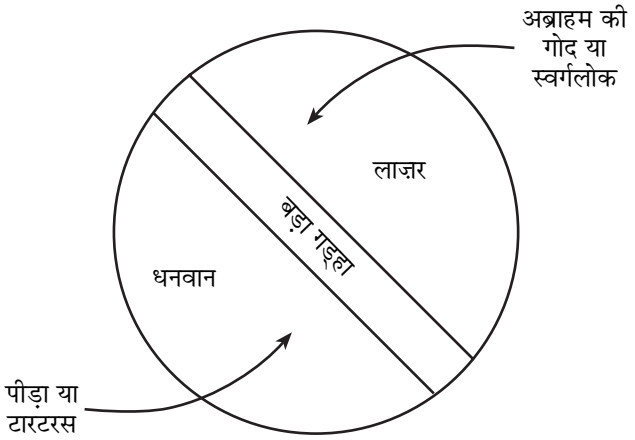

रेखाचित्र को फिर से देखें। ध्यान दें कि अधोलोक के संसार में कम से कम दो अलग-अलग स्थान हैं। धनी व्यक्ति इन में से एक में, जबकि लाज़र दूसरी जगह था। आपको ''बड़ा गड्ढा'' नामक एक भाग भी दिखाई देगा।[19] आइए उस धनी आदमी की अवस्था से आरम्भ करते हुए सामान्य विवरणों के प्रत्येक पहलू पर विचार करते हैं, ''और अधोलोक में उसने *पीड़ा में पड़े हुए* अपनी आंखें उठाईं'' (लूका 16:23क)। मैंने धनी आदमी के स्थान को ''पीड़ा'' लिखा है।

''पीड़ा'' शब्द के नीचे आपको ''या टारटरस'' शब्द मिलेंगे। यह शब्दावली 2 पतरस 2:4 से ली गई है, जिसमें शब्द ये हैं कि धनी आदमी अपने आप को स्वयं ढूंढे: ''परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को, जिन्होंने पाप किया, नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अंधेरे कुंडों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बंदी रहें।'' 2 पतरस 2:4 में ''नरक'' शब्द *gehenna*

का अनुवाद नहीं है, जिसका अर्थ अनन्त दण्ड है, बल्कि यूनानी शब्द *tartaros* का एक रूप है।[20] *tartaros* का इस्तेमाल यूनानियों द्वारा ''हेडिस के उस भाग'' के लिए किया जाता था, ''जहां दुष्ट लोगों को रखा और यातना दी जाती थी।''[21] ध्यान दें कि ''न्याय'' अभी हुआ नहीं था, सो यह न्याय के दिन से पहले की अवस्था थी। जैसा कि मैंने कहा, यह स्थिति धनी मनुष्य की स्थिति वाली नहीं तो उसकी तरह अवश्य लगती है।

आइए अब लाज़र की अवस्था देखने के लिए मुड़ते हैं: मैंने उसकी अवस्था के लिए ''अब्राहम की गोद'' लिखा है, क्योंकि धनी मनुष्य ने ''दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा'' (लूका 16:23)। ''किसी की गोद में'' होने का अर्थ बहुत निकट होना निकट सम्बन्ध और संवाद को दर्शाता था।[22] स्पष्टतया लाज़र आनन्द और शांति में था। न्याय की प्रतीक्षा करने वाले धर्मियों की स्थिति ऐसी ही है।

''अब्राहम की गोद'' शब्दों को मैंने नीचे ''या स्वर्गलोक'' लिखा है। यह पदनाम यीशु के अधोलोक के संसार में अपने जाने से लिया गया है। क्रूस पर उसने डाकू से कहा था, ''... आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। ''स्वर्गलोक'' एक फारसी शब्द फिरदौस से लिया गया है, जिसका अर्थ ''आनन्द का स्थान या आनन्द का बगीचा'' है।[23] बाइबल में इस शब्द का इस्तेमाल कई बार स्वर्ग के लिए किया जाता है (देखें प्रकाशितवाक्य 2:7), क्योंकि स्वर्गलोक में थोड़ी देर रहने के बाद यीशु ने कहा था कि वह ''अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया'' था (20:17)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने अपने संदेश में संकेत दिया था कि यीशु की देह चाहे कब्र में थी, पर उसकी आत्मा ''हेडिस'' (अधोलोक) में ही थी (प्रेरितों 2:31)।[24] लूका 23:43 और प्रेरितों 2:31 को मिलाने पर हम निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु की आत्मा अधोलोक के संसार के उस भाग में थी, जिसे ''स्वर्गलोक'' कहा जा सकता है। यह मानना तर्कसंगत लगता है कि ''स्वर्गलोक'' ''अब्राहम की गोद में'' होने की तरह ही है। अन्य शब्दों में, यह दोनों वाक्यांश धर्मी मृतकों की अवस्था को बताते हैं अर्थात उस अवस्था को जिसमें वे न्याय की प्रतीक्षा करते हैं, परन्तु यह स्थिति शांति, आनन्द और सुरक्षा से परिपूर्ण है।

यह देखने के बाद कि दो स्थितियां हैं, जिनमें न्याय की प्रतीक्षा की जा सकती है–उनमें से एक शांति और सुरक्षा के साथ है और एक भय और संताप के साथ, हमें यह प्रश्न उठाना चाहिए कि ''पर यदि धर्मी लोग पहले ही प्रसन्न हैं और दुष्ट लोग पहले ही यातना में हैं, तो न्याय के दिन का क्या औचित्य है?''[25] मुझे यह मानने में कोई आपत्ति नहीं है कि इस संसार के आगे के जीवन की चर्चा के हमारे प्रयासों की तुलना दो अजन्मे नवजातों द्वारा यह अनुमान लगाने से की जा सकती है कि कोख से बाहर के जीवन में वे कैसे होंगे। हमारे उत्तरों से हमारी अज्ञानता का ही पता लगेगा। परन्तु इस प्रश्न पर कुछ टिप्पणियां लाभदायक होंगी। एक उत्तर यह हो सकता है कि न्याय का दिन दण्ड देने के दिन की तरह न्याय का दिन नहीं होगा, जिसमें दोषी और निर्दोष का पता लगाने में समय बीत जाए, बल्कि एक ऐसा दिन जिसमें परमेश्वर का अनुग्रह और न्याय दोनों ही पूर्ण रूप से दिखाए जाएं।

परन्तु इसका अन्तिम उत्तर शायद इस समझ में है कि जब हम ''पीड़ा'' और ''अब्राहम

की गोद'' की बात करते हैं, तो हम स्थानों की बात नहीं कर रहे होते, बल्कि अवस्था की बात कर रहे होते हैं। एक अधर्मी आत्मा *जहां भी* हो, यह जानते हुए कि न्याय के दिन उसमें कमी पाई जाएगी, प्रतीक्षा करते हुए दुखी ही होगी। धर्मी व्यक्ति *जहां भी* हो, उसे मालूम होगा कि न्याय के दिन परमेश्वर उससे कहेगा, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, ...'' (मत्ती 25:21क, 23क) और प्रतीक्षा करते हुए वह प्रसन्न होगा।

नीचे दिया गया उदाहरण सहायक हो भी सकता है और नहीं भी। कल्पना करें कि आप पर एक जघन्य अपराध का आरोप है और आप *बिना किसी शक के* यह जानते हुए कि निर्णय सही ही होगा, फैसले की प्रतीक्षा कर रहे थे। यदि आप निर्दोष हैं, तो आपको बरी कर दिया जाएगा। इस आश्वासन के साथ, आप पूरे आनन्द और शांति से मुकदमे की प्रतीक्षा कर सकते हैं। परन्तु यदि आप दोषी हैं, तो निश्चय ही आप आगे आने वाले दण्ड के भय से डरे हुए रहेंगे। यह उदाहरण अपने आप में सम्पूर्ण नहीं है, परन्तु कम से कम इससे अन्तिम न्याय से पहले की दो अलग-अलग भावनाओं का पता चलता है।

कोई मेरे रेखाचित्र को देखकर पूछ सकता है, ''क्या यह प्रायश्चित [परगेटरी की शिक्षा] के विचार की तरह नहीं है?'' कदापि नहीं। परगेटरी या प्रायश्चित की पूरी अवधारणा ही बाइबल से बाहर की है। पहली बात तो यह कि ये शब्द ही बाइबल के नहीं हैं।[26] परगेटरी की शिक्षा में एक विचार पाया जाता है कि आत्मा शोक की स्थिति (परगेटरी) से आनन्द की स्थिति (स्वर्ग) में जाती है। इसे दूसरे ढंग से कहें, तो इस शिक्षा के अनुसार मनुष्य को मरने के बाद ''दूसरा अवसर'' मिल सकता है। रेखाचित्र को फिर से देखें और ''बड़ा गड्हा'' पर ध्यान दें। अब्राहम ने धनी मनुष्य को बताया था कि ''हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड्हा *ठहराया गया है* कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके'' (लूका 16:26)। बाइबल सिखाती है कि मृत्यु के बाद कोई ''दूसरा अवसर'' नहीं है:

- *प्रकाशितवाक्य 2:10.* यदि कोई ''*प्राण देने तक* विश्वासी'' रहता है तो प्रभु उसे ''जीवन का मुकुट'' देगा।
- *2 कुरिन्थियों 5:10.* ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला *जो उस ने देह के द्वारा किए हों,* पाए''-उसके अनुसार नहीं जो किसी के देह त्याग देने के बाद कोई उसके लिए करता है।
- *यूहन्ना 8:21.* यदि कोई अपने पापों में ही *मरता है,* तो वह वहां *नहीं* जा *सकता,* जहां मसीह है।

सारांश

मैंने आपको वही बताने की कोशिश की है, जो मेरा विश्वास है कि बाइबल ''मृतक कहां हैं?'' के प्रश्न के उत्तर देती है। परमेश्वर ने हमें बताने के लिए इतना ही चुना है। हमें

इससे ही संतुष्ट होना पड़ेगा। अन्त में, मैं इस प्रश्न को और व्यावहारिक तथा व्यक्तिगत बनाता हूं: यदि अगले पांच मिनटों में आपकी मृत्यु हो जाए तो आप कहां होंगे? यही बात सचमुच में आपकी परेशानी होनी चाहिए।

मसीह हमें उसमें विश्वास लाने (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराने (लूका 13:3), उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करने (मत्ती 10:32) और अपने पापों की क्षमा के लिए पानी में डुबकी लेने के लिए कहता है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3-6)। फिर हमें शेष जीवनों में हर दिन उसके साथ चलना है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। क्या आपने ये सब बातें कर ली हैं? क्या आप भरोसे और आज्ञाकारिता का जीवन जी रहे हैं? यदि आपका उत्तर ''नहीं'' है तो मेरी प्रार्थना है कि आप तुरन्त प्रभु की आज्ञा मान लें। इससे बढ़कर कुछ नहीं है!

नोट्स

मुझे नहीं लगता कि इनमें से अधिकतर विचार मेरे हैं। जहां तक मुझे याद है, सुसमाचार के विश्वासी प्रचारकों द्वारा अलग-अलग ढंग से पहले भी इस पर प्रचार किया जा चुका है। क्योंकि मुझे याद नहीं है कि मैंने किस-किस को उद्धृत किया है, इसलिए मैं उन *सभी* को ''धन्यवाद'' देना चाहूंगा, जिन्होंने इस विषय पर प्रचार किया या लिखा है।

हाल ही के समय तक, मुझे इस बात का पता नहीं था कि मसीही भाइयों में इस प्रवचन के निष्कर्षों पर कुछ असहमति पाई जाती है। उनका विश्वास है कि मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद से धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग में जाते हैं। उन लोगों के प्रति सम्मान के कारण, मैं ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग में जाते हैं?'' पर एक अतिरिक्त लेख शामिल कर रहा हूं। लूका 16:19-31 में दिखाई गई अवस्था पर विश्वास करने वाले लोगों को लगेगा कि कीमती कागज़ बेकार गया है। यह विश्वास करने वालों को कि आज यह बात लागू नहीं होती, यह लगेगा कि मैंने उनके तर्कों का उत्तर अपर्याप्त ढंग से दिया है। पिलातुस के शब्दों से उधार लेकर मैं कहता हूं, ''मैंने जो लिख दिया सो लिख दिया'' (यूहन्ना 19:22)।

यद्यपि यह प्रवचन इतना लम्बा है कि हर जगह इसमें से प्रचार करना कठिन हो सकता है, पर इसे परगेटरी जैसे अतिरिक्त विषयों को बिना छुए छोटा किया जा सकता है। इस सामग्री का इस्तेमाल दो भागों में या क्लास के रूप में भी किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]कुछ लोग इब्रानियों 12:1 का इस्तेमाल यह सिखाने के लिए करते हैं कि हमारे आस-पास मरे हुए लोगों की आत्माएं मंडराती रहती हैं। इब्रानियों 12:1-4 में मसीही जीवन में बने रहने को सिखाने के लिए एक जाति के रूपक का इस्तेमाल किया गया है। हमें किसी उदाहरण की बातों को उनसे डॉक्ट्रिन की बातें नहीं बना लेनी

चाहिए। [2]लूका 16 वाला लाज़र वही लाज़र नहीं है, जो बैतनिय्याह में रहता था और यीशु का मित्र था (यूहन्ना 11)। [3]''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 176 पर '' 'नरक' से एक पत्र'' प्रवचन देखें। [4]''मसीह का जीवन, भाग 4'' में ''मुझे कहानी सुनाओ'' पाठ में चर्चा देखें कि लूका 16:19-31 एक ''दृष्टांत'' है या नहीं। [5]यीशु की बात के सम्बन्ध में ''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 153 पर ''मुझे कहानी सुनाओ'' पाठ में मिलने वाले संदर्भ पर टिप्पणियां देखें। [6]''दृष्टांत'' शब्द की चर्चा के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 3'' में पृष्ठ 12 पर ''और उसने उनसे दृष्टांतों में बहुत सी बातें कहीं'' पाठ देखें। [7]ऐसे लोग हैं, जो यह मानते हैं कि लूका 16 अध्याय मसीह की मृत्यु *से पहले* मृतकों की स्थिति का ठीक-ठीक विवरण है, परन्तु उसकी मृत्यु के *बाद* का नहीं। इस स्थिति की चर्चा ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' पाठ में की गई है। [8]वे कह सकते हैं, ''कब्र में''-परन्तु शरीर तो नष्ट हो जाता है और मिट्टी में मिल जाता है, उनका अन्तिम उत्तर यही है कि ''कहीं नहीं।'' [9]हम पाप में *मरे हुए* होते हैं (इफिसियों 2:1) जब हमारे पाप हमें परमेश्वर से अलग कर देते हैं (यशायाह 59:1, 2)। शरीर से आत्मा के निकल जाने पर हम शारीरिक रूप में *मृतक* होते हैं (याकूब 2:26)। ''दूसरी *मृत्यु*'' (प्रकाशितवाक्य 20:14) अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग होने के समय होती है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। [10]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ़ एच. थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. एण्ड क्लार्क, 1901; रीप्रिंट; ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 677.

[11]थेयर, 520. [12]यह बात कि यह स्थिति क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय बदल गई और इसलिए लूका 16 आज लागू नहीं होता, इस पुस्तक में आगे आने वाले पाठ ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' में विचार किया गया है। [13]ऐसी ही आपत्ति अधोलोक के संसार की अवधारणा पर उठाई जाती है। इस पर ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' पाठ में विचार किया जाएगा। [14]मैं ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' पाठ में विस्तार से इस विचार को खोलूंगा। [15]पुराना नियम मृतकों की स्थिति के बारे में नये नियम से कम बताता है। इब्रानी शब्द *Sheol* यूनानी शब्द *Hades* से अधिक सामान्य (और स्पष्ट) है। *शियोल* कई बार केवल कब्र के लिए इस्तेमाल होता है। [16]थेयर के लैक्सिकन में ''अदृश्य'' है, 11. [17]थेयर, 11. [18]कुछ उलझन शायद अंग्रेज़ी बाइबल KJV में नरक के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''hell'' का इस्तेमाल यूनानी शब्द *हेडिस* के लिए करने के कारण आता है। लूका 16:23 में यही बात है। [19]KJV में ''a great gulf'' है (लूका 16:26)। [20]मेरी इंटरलीनियर बाइबल के अनुसार, एक ही यूनानी शब्द से अनुवाद किए पूरे वाक्यांश ''नरक में भेजकर'' का मूल अर्थ ''टारटरस में भेजकर'' है।

[21]*द अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सैमुएल बैगस्टर एण्ड सन्ज़ लिमिटेड, 1971), 398. [22]यह अलंकार सम्भवतया उस समय की खाने-पीने की आदतों से लिया गया है। मेज़बान के दाईं ओर झुका हुआ व्यक्ति (सबसे सम्मानजनक स्थान) ''उसकी गोद'' में माना जाता था (यूहन्ना 13:23, 25; 21:20; देखें यूहन्ना 1:18)। अमेरिका में हमारे यहां ऐसे शब्दों का इस्तेमाल अभी भी होता है, जैसे ''bosom buddies'' और ''in the bosom of friends.'' [23]सप्तति अनुवाद में लिया गया शब्द ''स्वर्गलोक'' शब्द अदन की वाटिका के अर्थ में इस्तेमाल होता था। [24]KJV में ''hell'' या नरक है, परन्तु प्रेरितों 2:31 में इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द *हेडिस* का रूप है। [25]इस पर मैं ''क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' पाठ में और बात करूंगा। ऐसी समस्या है, जिसका समाधान हम में से उन लोगों के लिए करना आवश्यक है, जो मृतकों की मध्य स्थिति में विश्वास रखते हैं, पर (जैसा कि मैं बल दूंगा) यह हमारे लिए इतनी बड़ी समस्या नहीं है, जितनी यह शिक्षा देने वालों के लिए है कि धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग में जाते हैं। [26]परगेटरी (''शुद्ध करना'' के लिए लातीनी शब्द से लिया गया) एक रोमन कैथोलिक शिक्षा है। वे यह सिखाते हैं कि दण्ड पाने वाले लोग सीधे नरक में जाते हैं परन्तु उनका विश्वास है कि मरने वाले ''अनुग्रह की स्थिति में'' हैं परन्तु उनके पाप अभी क्षमा नहीं हुए वे परगेटरी में जाते हैं। जीवित लोगों को परगेटरी में रहने वालों की ओर से, अपने प्रियजनों के उस कष्ट के स्थान को कम करने के लिए मास करवाने, प्रार्थना करवाने तथा चंदा देने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह शिक्षा रोमन कैथोलिक चर्च की आमदनी का बड़ा स्रोत है।